DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
समास
Part -5
LIVE
19-07-2024 05:00 PM

समास

- तत्पुरुषः ॥
- अधिकारोऽयं प्राग्बहुव्रीहेः ॥
- द्विगुश्च ॥
- द्विगुरपि तत्पुरुषसंज्ञकः स्यात् ॥
- द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः ॥
- द्वितीयान्तं श्रितादिप्रकृतिकैः सुबन्तैः सह वा समस्यते स च तत्पुरुषः । कृष्णं श्रितः कृष्णश्रित इत्यादि॥

कृष्ण अम् श्रित सु	द्वितीयाश्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः
कृष्ण श्रित	सुपो धातुप्रातिपदिकयोः
कृष्णश्रित	स्वौजसमौट्छस्टाभ्या..........
कृष्णश्रितः	रुत्वविसर्ग

तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ॥

तृतीयान्तं तृतीयान्तार्थकृतगुणवचनेनार्थेन च सह वा प्राग्वत्। शङ्कलया खण्डः शङ्कलाखण्डः । धान्येनार्थो धान्यार्थः । तत्कृतेति किम् ? अक्ष्णा काणः ॥

शङ्कला टा खण्ड सु

शङ्कला खण्ड

तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन

सुपो धातुप्रातिपदिकयोः

❖ कर्तृकरणे कृता बहुलम् ॥

❖ कर्तरि करणे च तृतीया कृदन्तेन बहुलं प्राग्वत्। हरिणा त्रातो हरित्रातः । नखैर्भिन्नः नखभिन्नः । (प.) कृद्ग्रहणे गतिकारकपूर्वस्यापि ग्रहणम् । नखनिर्भिन्नः ॥

✓ चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः ॥

❖ चतुर्थ्यन्तार्थाय यत् तद्वाचिना अर्थादिभिश्च चतुर्थ्यन्तं वा प्राग्वत्। यूपाय दारु यूपदारु। (तदर्थेन प्रकृतिविकृतिभाव एवेष्टः) । तेनेह न रन्धनाय स्थाली।

यूप ङे दारु सु	चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः
यूप दारु	सुपो धातुप्रातिपदिकयोः
यूपदारु सु	स्वौजसमौट्छस्टाभ्या.........
यूपदारु	स्वमोर्नपुंसकात्।

- पञ्चमी भयेन ॥
- चोराद्भयं चोरभयम् ॥

चोर ङसि भय सु	पञ्चमी भयेन
चोर भय	सुपो धातुप्रातिपदिकयोः
चोरभय सु	स्वौजसमौट्छस्टाभ्या..........
चोरभयम्	अतोऽम्, अमि पूर्वः

✓ षष्ठी ॥

✓ सुबन्तेन प्राग्वत् । राज्ञः पुरुषः राजपुरुषः॥

राजन् ङस् पुरुष सु — षष्ठी

राजन् पुरुष — सुपो धातुप्रातिपदिकयोः

राजपुरुष — नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य

विभक्तिकार्य के पश्चात् राजपुरुषः

सूत्र नदीभिश्च ।

वृत्ति नदीभिः सह संख्या समस्यते। वार्तिकम् - समाहारे चायमिष्यते। पञ्चगङ्गम्, द्वियमुनम् ।

अनुवाद संख्यावाची सुबन्त नदीवाचक सुबन्तों के साथ अव्ययीभावसमास को प्राप्त करता है। वार्तिकार्थ यह समाहार अर्थ में ही इष्ट है।

व्याख्या - नदीभिः च यह पदच्छेद है। इस सूत्र में "संख्या वंश्येन" सूत्र से 'संख्या' पद की तथा 'सह सुपा" सूत्र से 'सह' पद की अनुवृत्ति होती है। "प्राक्कडारात् समासः" "अव्ययीभावः" इनका अधिकार पूर्ववत् है ही। यहाँ नदीभिः में बहुवचन ग्रहण करने से नदीसंज्ञक (गौरी इत्यादि) शब्दों का तथा नदी शब्द का ग्रहण अभिप्रेत नहीं है, अपितु नद्यर्थकों का ग्रहण होता है। नद्यर्थकों से नदीविशेष वाचकों गङ्गा, यमुना इत्यादि तथा स्वयं नदी शब्द का ग्रहण हो जाता है।

उदाहरण - पञ्चगङ्गम् - पञ्चानां गङ्गानां समाहारः इस लौकिक विग्रह में पञ्चन् आम् गङ्गा आम् इस अलौकिक विग्रह में "नदीभिश्च" इस सूत्र से अव्ययीभावसमास करने पर समाससंज्ञा के पश्चात् "कृत्तद्धितसमासाश्च" से प्रातिपदिकसंज्ञा तथा "सुपो धातुप्रातिपदकयोः" सूत्र से सुब्लुक् करने पर पञ्चन् गङ्गा इस अवस्था में यहाँ समासविधायकसूत्र "नदीभिश्च" सूत्र में अनुवर्तित संख्या पद प्रथमान्त होने के कारण "प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् इस सूत्र से संख्यावाचक पञ्चन् शब्द की उपसर्जनसंज्ञा होने पर 'उपसर्जनं पूर्वम्" सूत्र से पूर्वनिपात होने पर पञ्चन् गङ्गा इस अवस्था में "न लोपः

प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से पञ्चन् के नकार का लोप करने पर पञ्च गङ्गा इस अवस्था में "अव्ययीभावश्च" सूत्र से अव्ययीभावसमास को नपुंसक विधान करके "ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदकस्य" सूत्र से ह्रस्व करके पञ्च गङ्ग इस अवस्था में पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा करके प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु-प्रत्यय करके "नाव्ययीभावादतोऽमत्वपञ्चम्याः सूत्र से सु को अम्-भाव करके पूर्वरूपादिकार्य के पश्चात् पञ्चगङ्गम् सिद्ध होता है।

सूत्र - चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-सुख-रक्षितैः

सूत्रवृत्ति - चतुर्थ्यन्तार्थाय यत् तद्वाचिना, अर्थादिभिश्च चतुर्थ्यन्तं वा प्राग्वत्। यूपाय यूपदारु। तदर्थेन प्रकृतिविकृतिभाव एवेष्टः, तेनेह न रन्धनाय स्थाली। दारु

सूत्रानुवाद - चतुर्थ्यन्त सुबन्त, उस चतुर्थ्यन्त के अर्थ (वाच्य) के लिये जो वस्तु तद्वाचक सुबन्त के साथ एवम् अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित इन सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

व्याख्या - चतुर्थी, तदर्थ-अर्थ-बलि-हित-सुख-रक्षितैः यह द्विपदात्मक सूत्र का पदच्छेद है। समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं।प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् के अनुसार चतुर्थी से चतुर्थ्यन्तं सुबन्तम् का ग्रहण होता है। तदर्थञ्च अर्थश्च बलिश्च हितं च सुखं च रक्षितं च तदर्थार्थवलिहितसुखरक्षितानि, तैः तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितः, इतरेतरद्वन्द्वः। तो इस प्रकार सूत्रार्थ फलित होता है चतुर्थयन्त सुबन्त, तदर्थ, अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित इन सुबन्तों के साथ विकल्प से समास को प्राप्त होता है और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

उदाहरण यूपदारु यूपाय दारु (यज्ञस्तम्भ हेतु लकड़ी), में सुबन्त दारू का उपयोग चतुर्थ्यन्त यूपाय के लिये होता है। यहाँ दारु (लकड़ी) प्रकृति है और यूपाय विकृति (क्योंकि यूप का निर्माण लकड़ी से ही होता है) है। अतः प्रकृत सूत्र द्वारा समास होकर यूपदारू बनता है।

व्याख्या - अर्थ-शब्द के साथ चतुर्थ्यन्त का समास नित्य होता है (नित्य समास होने के कारण यहाँ अस्वपदलौकिक विग्रह होगा) तथा इस समास का लिङ्ग भी विशेष्य के अनुसार होता है। विशेष्य के अनुसार लिङ्ग निर्धारण का कारण यह है कि परवल्लिङ्ग द्वन्द्वतत्पुरुषयोः सूत्र से तत्पुरुष समास में उत्तरपद के अनुसार समास (समस्तपद) का लिङ्ग होता है। अतः यहाँ इस सूत्र से परवल्लिङ्ङ्गता को बाधकर विशेष्य के अनुसार समस्तपद का लिङ्गनिर्धारण किया जाता है।

सूत्र पञ्चमी भयेन 2.1.37

सूत्रवृत्ति - चोराद् भयम् चोरभयम्।

सूत्रानुवाद - पञ्चम्यन्त सुबन्त का भयवाचक सुबन्त के साथ समास होता है वह तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या - यह द्विपद सूत्र है। पूर्वसूत्रों की तरह यहाँ भी समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम् के अनुसार 'पञ्चमी' से 'पञ्चम्यन्त सुबन्त' का ग्रहण होता है। तो पञ्चम्यन्त सुबन्त का भयप्रकृतिक (भयवाचक) सुबन्त के साथ विकल्प से तत्पुरुष समास होता है।

उदाहरण - चोरभयम् चोराद् भयम् इस लौकिक विग्रह में चोर ङसि भय सु इस अलौकिक विग्रह में पञ्चमी भयेन इस सूत्र से पञ्चम्यन्त का भयशब्द से समास होने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर पञ्चम्यन्त के समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसकी (चोर शब्द की) उपसर्जनसंज्ञा तथा उपसर्जनसंज्ञक का पूर्वनिपात करके चोर्भय इस अवस्था में समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करके विभक्ति कार्य करके (सु को अम्भावपूर्वरूपादि) चोरभयम् रूप सिद्ध होता है।

सूत्र - षष्ठी 2.2.8

सूत्रवृत्ति - सुबन्तेन प्राग्वत्। राजपुरुषः।

सूत्रानुवाद - षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है जो कि तत्पुरुष संज्ञक होता है।

व्याख्या- यह एकपदात्मक सूत्र है। इसका अर्थ पूर्ण करने हेतु समर्थः पदविधिः, समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुष इनकी अनुवृत्ति करनी पड़ती है। प्रत्ययग्रहण परिभाषा से षष्ठी, सुप्. सुपा सबका अर्थ क्रमशः षष्ठ्यन्त, सुबन्त, सुबन्तेन हो जाता है। तब पूर्वोक्तार्थ लब्ध होता है कि -षष्ठ्यन्त सुबन्त का समर्थ सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है जो कि तत्पुरुष संज्ञक होता है।

उदाहरण - राजपुरुषः राज्ञः पुरुषः इस लौकिक विग्रह में राजन् ङस्. पुरुष सु इस अलौकिकविग्रह में षष्ठी इस सूत्र से षष्ठ्यन्त का समर्थ सुबन्त पुरुषशब्द से समास होने पर समास की प्रातिपदिकसंज्ञा तथा सुब्लुक् होने पर षष्ठ्यन्त के समासविधायक सूत्र में प्रथमानिर्दिष्ट होने से उसकी (राजन् शब्द की) उपसर्जनसंज्ञा तथा उपसर्जनसंज्ञक का पूर्वनिपात करके राजन्पुरुष इस अवस्था में न लोप प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से राजन् शब्द के नकार का लोप होने पर राजपुरुष इस समुदाय की पुनः प्रातिपदिकसंज्ञा तथा प्रथमा एकवचन विवक्षा में सु प्रत्यय करके रुत्वविसर्गादि विभक्ति कार्य करके राजपुरुषः रूप सिद्ध होता है।

व्याख्या विशेषणम्, विशेष्येण, बहुलम् यह त्रिपदात्मक सूत्र है। इस सूत्र में समासः, सुप्, सह सुपा, विभाषा, तत्पुरुषः पूर्वतः अधिकृत हैं। यहाँ पूर्वकालैकसर्वजस्त०' सूत्र से 'समानाधिकरणेन' की अनुवृत्ति की जाती है। भेदक (विशेषण) सुबन्त, समानाधिकरण भेद्य (विशेष्य) सुबन्त के साथ बहुल प्रकार से समास को प्राप्त करता है। यह समास तत्पुरुष संज्ञक होता है। समानाधिकरण समास होने से यह कर्मधारय कहलाता है। विशेषण शब्द के प्रथमा निर्दिष्ट होने से उत्सर्गतः विशेषण का पूर्वनिपात होता है।

TGT Test

उदाहरणम् नीलोत्पलम् - नीलम् उत्पलम् इस लौकिकविग्रह में नील सु उत्पल सु इस अलौकिकविग्रह में 'नील सु' इस विशेषण का 'उत्पल सु' इस विशेष्य के साथ विशेषणं विशेष्येण बहुलम् सूत्र द्वारा समास हो जाता है। समासविधायक इस सूत्र में विशेषणम् पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः नील सु की उपसर्जनसंज्ञा होकर उपसर्जनं पूर्वम् से उस का पूर्वनिपात हो जाता है नील सु उत्पल सु अब समास की कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से प्रातिपदिक के अवयव सुप् प्रत्ययों का लुक् एवं आद् गुणः से गुण एकादेश करने पर नीलोत्पल इतना बन जाने पर परवल्लिङ्ग द्वन्द्वतत्पुरुषयोः के अनुसार यहां परपद

अर्थात् 'उत्पल' के अनुसार समास का लिङ्ग होना चाहिये। 'उत्पल' नपुंसक है अतः समास का लिङ्ग भी नपुंसक होगा। प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय लाने पर अतोऽम् से उसे अम् आदेश तथा अमि पूर्वः से पूर्वरूप करने पर 'नीलोत्पलम्' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

ध्यातव्य - बहुल प्रकार से प्रवृत्त होने के कारण यह समास कहीं पर नित्य होता है। जैसे कृष्णसर्पः यहाँ प्रकिया दिखाने के लिए ही कृष्णः सर्पः ऐसा लौकिक विग्रह दिखाया जाता है। कृष्ण सु सर्प सु ऐसा अलौकिकविग्रह दशा में समासादिनिमित्त सुब्लुक्-पूर्वनिपातादि कार्य करके कृष्णसर्पः रूप सिद्ध होता है। वस्तुतः कृष्णसर्प जातिविशेष में रूढ होने के कारण इसका विग्रह नहीं होता। इसी तरह बहुल ग्रहण के कारण तो कहीं कहीं यह समास होता ही नहीं। जैसे- रामो जामदग्न्यः। यहाँ विशेषण विशेष्य दोनों समानाधिकरण में विद्यमान है तथापि समास नहीं होता।

सूत्र - उपमानानि सामान्यवचनैः

सूत्रवृत्ति - घन इव श्यामः घनश्यामः ।

सूत्रानुवाद - उपमानवाचक सुबन्त, समानधर्म को कह चुके हुए समानाधिकरण सुबन्तों के साथ समास को प्राप्त होते हैं और वह समास तत्पुरुषसंज्ञक होता है।

व्याख्या - उपमानानि, सामान्यवचनैः यह द्विपदात्मक सूत्र है। समानाधिकरणेन पद की अनुवृत्ति पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन सूत्र से होती है। समासः, सुप्. सह सुपा, तत्पुरुषः ये सब पूर्वतः अधिकृत हैं। उपमीयते सदृशतया परिच्छिद्यते यैस्तानि उपमानानि, करणे ल्युट्। जिन के द्वारा किसी वस्त्वन्तर की तुल्यता या समानता दर्शाई जाती है उन को उपमान कहते हैं।

समानस्य भावः सामान्यम्, साधारणो धर्म इत्यर्थः। सामान्यम् उक्तवन्त इति सामान्यवचनाः, तैः सामान्यवचनैः । उपमान आर उपमेय में रहने वाली समानता (समानधर्म) को 'सामान्य' कहते हैं। जो शब्द पहले सामान्य (समानधर्म) को कह कर पुनः मत्वर्थीय अच् प्रत्यय' के बल से या उपचार (आरोप) के कारण उस सामान्य धर्म से युक्त द्रव्य को कहने लगे तो उसे 'सामान्यवचन' कहते हैं। यथा घन इव श्यामः (श्रीकृष्णः)। श्रीकृष्ण बादल की तरह श्यामवर्ण वाला है। यहाँ 'घन' (बादल) उपमान है।

श्रीकृष्ण उपमेय है। उपमान और उपमेय में सामान्य श्यामत्व है। श्यामशब्द पहले तो श्यामगुण का वाचक होता है परन्तु बाद में श्यामगुणोऽस्त्यस्येति श्यामः (मत्वर्थीयोऽच्प्रत्ययः) इस प्रकार श्यामगुण वाले पदार्थ (श्रीकृष्ण) को कहने लग जाता है, तो अब यह श्यामशब्द सामान्यवचन हुआ। यह तत्पुरुष समास समानाधिकरण समास होने के कारण तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारय सूत्र से कर्मधारयसंज्ञक होता है।

उदाहरण घनश्यामः - धन इव श्यामः इस लौकिकविग्रह में घन सु श्याम सु इस अलौकिकविग्रह में उपमानानि सामान्यवचनैः सूत्र द्वारा तत्पुरुषसमास (कर्मधारय) हो जाने पर समाससूत्र में 'उपमानानि' पद प्रथमानिर्दिष्ट है अतः तद्बोध्य 'घन सु' की उपसर्जनसंज्ञा होकर उपसर्जनं पूर्वम् से उस का पूर्वनिपात हो जाता है कृ घन सु श्याम सु अब कृत्तद्धितसमासाश्च से समास की प्रातिपदिकसंज्ञा, सुपो धातुप्रातिपदिकयोः से समास के अवयव सुपों का लुक होने पर घनश्याम समुदाय की पुनः प्रातिपदिकत्वात् सुबुत्पत्ति के प्रसङ्ग में प्रथमा के एकवचन की विवक्ष में 'सु' प्रत्यय लाकर विभक्ति कार्य रुत्वविसर्ग कर 'घनश्यामः' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

सूत्र नञ्

सूत्रवृत्ति - नञ् सुपा सह समस्यते।

सूत्रानुवाद - नञ् इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है।

व्याख्या यह एक पदात्मक सूत्र है। 'नञ् प्रथमान्त पद है। 'सह सुपा सूत्र से सुपा पद की अनुवृत्ति है। 'तत्पुरुषः" एवं "समासः" का अधिकार है। इस सूत्र में निषेधार्थक नञ का ग्रहण है न कि नञ् प्रत्यय का जो 'स्त्रीपुंसाभ्यां नत्रनञौ' इत्यादि सूत्र से विहित है।

नञ के ञ की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः से लोप होकर 'न' शेष बचता है। यहाँ 'न' का ग्रहण नहीं है यद्यपि वह भी निषेधार्थक है और नञ् के अवशिष्ट न के सदृश ही दिखता है। इस प्रकार नञ् सूत्र का फलितार्थ होगा- नञ् (निषेधार्थक) का समर्थ-सुबन्त के साथ समास होता है। यह समास तत्पुरुष का ही एक भेद है।

सूत्र नलोपो नञः

सूत्रवृत्ति - नञो नस्य लोपः उत्तरपदे। न ब्राह्मणः अब्राह्मणः।

सूत्रानुवाद - उत्तरपद के पर में होने पर नञ् के नकार का लोप होता है।

व्याख्या - नलोपः नञः यह पदच्छेद है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। 'नलोपः' प्रथमान्त पद, 'नञः षष्ठ्यन्त पद है। यहाँ न लुप्तषष्ठीकपद है। 'अलुगुत्तरपदे सूत्र से उत्तरपद की अनुवृत्ति हुई है। इस प्रकार सूत्र का फलितार्थ है- नञ के नकार का उत्तर पद के पर में रहने पर लोप होता है।

उदाहरण - अब्राह्मणः (ब्राह्मण से भिन्न परन्तु क्षत्रिय जैसा) - न ब्राह्मण इस लौकिक विग्रह में न ब्राह्मण सु इस अलौकिक विग्रह में नञ् सूत्र से समास हुआ। प्रातिपदिक संज्ञा, विभक्ति का लुक् करके न ब्राह्मण बना। प्रथमा निर्दिष्ट न की उपसर्जन संज्ञा और उसका पूर्व निपात। नलोपो नञः इस सूत्र से ब्राह्मण पद उत्तर पद में होने के कारण न के नकार का लोप हुआ, स्थिति हुई अ ब्राह्मण- अब्राह्मण। एकदेशविकृतन्यायेन अब्राह्मण को प्रातिपदिक मानकर स्वादि प्रत्ययों के विधानोत्तर अब्राह्मणः रूप सिद्ध हुआ। यद्यपि यहाँ निषेध हुआ है तथापि तत्पुरुष समास होने के कारण उत्तर पद की ही प्रधानता होती है।

न + धर्मः = अधर्मः

नञ् + ब्राह्मणः = अब्राह्मणः

न + इच्छा = अनिच्छा

न + अश्वः = अनश्वः

न + उदारः = अनुदारः

नीलोत्पल:

घनश्याम:

महाकवि:

महान् सु कवि सु

महान् कवि

महाकवि सु

महाकवि.